ताकि वह भी इस बात को समझें और इस प्रकार के अपराध दोबारा न हों। आपका बहुत बहुत धन्यवाद।

श्री राम नरेश यादव :(उत्तर प्रदेश) : महोदया, मैं भी आपकी अनुमति से इसके साथ अपने को ऐसोशियेट करता हूं। सरकार इस मामले में कड़ी से कड़ी कार्यवाही करे और पूरा सदन, आप भी इसमें शामिल हैं, इस घटना के साथ अपने को सम्बद्ध करके सरकार को निर्देश दें कि इसके खिलाफ सख्त कदम उठाये ताकि इस तरह की घटनायें न हों। इनकी जितनी भी निन्दा की जाये कम है।

उपसभापति : मैंने बहुत दफा इस चीज से अपने को एसोशियेट किया है। ऐसोशियेशन से अगर मसला हल हो जाता तो मैं स्वयं के लिये ऐसोशियेटड हूं। मगर मैं सोचती हूं कि मसला उठे ही नहीं, किसी पर अत्याचार हो ही नहीं ताकि सदन में उसकी बात ही न उठे, ऐसा समय हमें लाना है। अब लंच के लिये हमें हाउस ऐडजार्न करना है।

I adjourn the House till 2.30 P.M.

The House then adjourned for lunch at thirty-four minutes past one of the clock.

The House reassembled after lunch at thirty-three minutes past two of the clock.

The Vice-Chairman (Shri Shankar Dayal Singh) in the Chair.

SPECIAL MENTIONS—contd.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SHANKAR DAYAL SINGH): Special Mentions. Shrimati Sarala Maheshwari.

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN (Tamil Nadu) : Sir, one minute. I have no quarrel with Saralaji. Let Saralaji speak, I have no objection to her speaking at all. But, how is it that when special mentions are listed in a particular way, the ones which are at the bottom get taken up first? I would request you to kindly convey our feelings to the Chairman. We are also waiting. To this special mention, I have no objection at all. It is not personal. But three special mentions which were lower down, were taken up first. I do not think it is fair to the other special mentions which are listed and which are waiting. Kindly convey these feelings to the Chairman.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SHANKAR DAYAL SINGH) : Yes. Smt. Sarlaji.

Threat to Writers, Press Reporters and Intellectuals the Hindu Communal Forces

श्रीमती सरला माहेश्वरी : (पश्चिमी बंगाल) : माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आपका शुक्रिया अदा करती हूं जो आपने मुझे बोलने का मौका दिया।

उपसभाध्यक्ष महोदय, यह विशेष उल्लेख प्रस्ताव लेखकों, बुद्धिजीवियों, कलाकारों और पत्रकारों को हिन्दू साम्प्रदायिक तत्वों द्वारा दी जा रही धमकियों के बारे में है। माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, सुप्रसिद्ध शायर फैज अहमद फैज ने कहा था कि :

"निसार मैं तेरी गलियों पर ऐ वतन,
जहां चली है रस्म कि कोई न सर
उठा के चले,

जो कोई चाहने वाला तवाफ को निकले,
नजर झुका के चले, जिस्म-ओ-जां बचा
के चले।"

उपसभाध्यक्ष, महोदय, दुनिया के प्रसिद्ध शायर फैज अहमद फैज ने अपनी इस नज्म के जरिये जिन काली ताकतों के शिकन्जे में मानवता जकड़ी हुई थी, उस त्रासदी को उन्होंने अपनी इस नज्म के जरिये व्यक्त किया था। उपसभाध्यक्ष महोदय,

मैं आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहूंगी कि आज यही काली ताकतें हमारे देश की सड़कों, गलियों और नुक्कड़ों को अपने काले शिकन्जे में कसती जा रही हैं। उपसभाध्यक्ष महोदय, मेरा संकेत बिल्कुल साफ है। 6 दिसम्बर के दिन जिन काली ताकतों ने पत्रकारों और फोटोग्राफरों पर नृशंस हमले किये उन्हीं ताकतों ने आज क्रमश: अपने दुष्कर्मों के जरिये व्यापक स्तर पर अपने हमलों का जाल फैलाना शुरू कर दिया है। मेरे पास 11 फरवरी के इकनोमिक टाइम्स की रपट है। इस रपट में बताया गया है कि किस तरह साम्प्रदायिक ताकतें हमारे लेखकों, पत्रकारों और बुद्धिजीवियों को धमका रही हैं। इस रपट में जनसत्ता के सम्पादक प्रभाष जोशी साहित्य अकादमी की हिन्दी पत्रिका "समकालीन भारतीय साहित्य" के सम्पादक गिरधर राठी, जाने माने तबला वादक अल्ला रखा, मशहूर चित्रकार मकबूल फिदा हुसैन, लेखक ओ० बी० विजयन, सुकुमार आझीकोठ तथा कवि चन्द्रकान्त द्वेत्य को लगातार फोन और पत्र आदि से धमकाया जा रहा है। जनसत्ता के सम्पादक प्रभाष जोशी ने तो अपने अखबार में यहां तक कहा है कि मुझे इस बात का ज्ञान नहीं था कि हिन्दी भाषा गालियों में भी इतनी समृद्ध है यह बात सिर्फ इन लेखकों, कलाकारों और बुद्धिजीवियों तक ही सीमित नहीं है, व्यापक पैमाने पर उन तमाम लोगों को डराया धमकाया जा रहा है जो आज इन धार्मिक कट्टरपंथी ताकतों के विरुद्ध आवाज उठा रहे हैं। इनमें संसद सदस्यों तक को बख्शा नहीं जा रहा है। मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगी कि हमारी पार्टी के एक सांसद ने जब अयोध्या के मसले पर एक प्रस्ताव रखा तो तभी से उनको धमकाने की प्रक्रिया शुरू हो गई और अभी इस सदन में इसी अधिवेशन में जब मैंने काश्मीर में मन्दिरों के मसले को उठाया तो उसके बाद ही लगातार मुझे कई फोन आये। यहां तक कि पत्र भी आये, अन्तिम चेतावनी देते हुए कि आप जो कर रही हैं वह सब बन्द करिये। हिन्दी के जो कवि चन्द्रकान्त द्वेत्य हैं, जिन्होंने बाबरी मस्जिद गिराये जाने पर बहुत व्यथित होकर कविता लिखी थी। बाबरी मस्जिद को गिराये जाने की घटना की तुलना उन्होंने भगवान की हड्डियों के तोड़े जाने से की थी। उन्हें फोन किये गये कि भगवान की हड्डियां तो बाद में तोड़ी जाएंगी, पहले तुम्हारी हड्डियां तोड़ी जायेंगी।

उप सभाध्यक्ष जी, आप स्वयं साहित्यकार हैं और इस बात को जानते होंगे कि जब भी तानाशाही हकूमतें सिर उठाती हैं तो उनका सबसे पहले हमला स्वतन्त्र चिन्तन, स्वतन्त्र विचार और स्वतन्त्र जीवन पर होता है। मैं यह कहना चाहूंगी कि आज इन साम्प्रदायिक कट्टरपंथी ताकतों ने हमारे देश में भी यह स्थिति पैदा कर दी है। साम्प्रदायिक ताकतें किस तरह से योजनाबद्ध ढंग से प्रचार चला रही हैं कि हमें हर रोज अनगिनत पत्रिकायें, पुस्तिकायें और पर्चों की फौज दिखाई देगी। इन ताकतों का प्रचार का तरीका यह है कि इनमें इतना साहस नहीं है कि सामने आयें, सामने आते हुए इन्हें शर्म आती है। इसीलिये प्रेम चन्द ने कहा था कि ये साम्प्रदायिक ताकतें हमेशा संस्कृति की दुहाई देती हैं क्योंकि इन्हें अपने असली रूप में सामने आने में शर्म आती है। मैं कहना चाहती हूं कि ये ताकतें जो घृणा का जघन्य साम्प्रदायिक प्रचार कर रही हैं उनको नीचे इतना लिखना भी गवारा नहीं करता है कि इसके प्रकाशक कौन हैं कौन से प्रेस से यह छापा गया है। लगातार एक सम्प्रदाय के विरुद्ध घृणा का विष वमन किया जा रहा है। इसलिये मैं चाहती हूं कि माननीय गृह मंत्री महोदय

अपने खुफिया विभाग के जरिये इन तमाम घटनाओं की तहकीकात करवायें और यह जो अदृश्य प्रचार चल रहा है, यह जो घृणित प्रचार चल रहा है, इस घृणित साम्प्रदायिक प्रचार की तह में जायें। यह काम उनके लिये मुश्किल नहीं होगा क्योंकि उनकी खुफिया एजेंसी काफी ताकतवर है। मुझे अफसोस है कि शासक पार्टी ने हालांकि कुछ संगठनों पर प्रतिबन्ध लगाया है, लेकिन यह प्रतिबन्ध के नाम पर एक मजाक है। यह बड़ा गम्भीर मामला है और मैं यह कहना चाहती हूं कि अगर यह प्रक्रिया चलती रही तो हमारे देश में उन तानाशाही ताकतों का राज हो जायेगा जो हमारी आवाज पर ताला जड़ देंगी और फिर हमें फैज की कविता की दुहाई देनी पड़ेगी। इसलिये मैं आपसे निवेदन करूंगी कि आप स्वयं गृह मंत्री जी को इस बात के लिये सचेत करें। यह आपके पेशे का भी दायित्व है और संसद सदस्य के नाते और आज आप जिस कुर्सी पर बैठे हैं उसका भी यह दायित्व है।

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : (उत्तर प्रदेश) : मैं अपने आपको इससे एसोसियेट करता हूं। खासतौर से जो सरला जी ने यह बताया कि इस किस्म के पंफ्लेट्स बांटे जा रहे हैं। इत्तफाक से मेरे पास इस किस्म के पंफ्लेट्स मौजूद हैं। सर, मैं इसमें सिर्फ एक और बात बता देना चाहता हूं जिससे इसकी सीरियसनेस का अन्दाजा होगा कि इनके अन्दर बहुत सी हिदायतें दी गई हैं, पंफ्लेट्स के अन्दर, इसके पीछे किसी का नाम नहीं दिया गया है। सिर्फ अंग्रेजी में ही नहीं उर्दू जुबान में छापकर, खास तौर से यह मुसलमानों में बांटे जा रहे हैं और पूरे मुल्क में बांटे जा रहे हैं। . .

شری محمد افضل عرف م. افضل [illegible]
میں اپنے آپ کو اس سے ایسوسی
ہوں خاص طور سے جو سرلہ جی نے یہ بتایا
کہ اس قسم کے پمفلٹ بانٹے جا رہے ہیں۔
اتفاق سے میرے پاس اس قسم کے پمفلٹ
موجود ہیں۔ سر میں اس میں صرف ایک اور
بات بتا دینا چاہتا ہوں جس سے اس کی
سیریس نیس کا اندازہ ہوگا کہ ان کے اندر
بہت سی ہدایتیں دی گئی ہیں [illegible] کے
اندر۔ اس کے پیچھے کسی کا نام نہیں دیا گیا
ہے۔ صرف انگریزی میں ہی نہیں اردو زبان
میں چھاپ کر خاص طور سے یہ مسلمانوں
میں بانٹے [illegible] ملک میں
بانٹے جا رہے ہیں . . .

उपसभाध्यक्ष (श्री शंकर दयाल सिंह) : ठीक है आपने एसोसियेट किया।

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : मैं एसोसियेट करता हूं और यह डिमांड करता हूं कि इन पंफ्लेट्स की तहकीकात की जाये और इंटेलीजेंस एजेंसीज के जरिये कि उनको कौन छाप रहा है, उनको पकड़ने का काम किया जाये।

شری محمد افضل عرف م. افضل : میں
ایسوسی ایٹ کرتا ہوں اور یہ ڈیمانڈ کرتا
ہوں کہ ان پمفلیٹس کی تحقیقات کی جائے
اور انٹلی جنس ایجنسیز کے ذریعہ کہ ان کو
کون چھاپ رہا ہے ان کو پکڑنے کا کام کیا جائے۔

Transliteration in Arabic script.